बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 103/2024) Year: 6th

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 01/04/2024

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ ग्रीष्म कालीन पीछेती उत्पाद हेतु कुल्फा, चौलाई, लोबिया, भिंडी, लौकी, करेला, कद्दू, तरोई, खीरा, ककड़ी, की बुआई करें। ➢ बैगन, शिमला मिर्च/मिर्च, भिंडी व कद्दू वर्गीय सब्जियों की फसलों में पलवार प्रयोग करें। ➢ फसलों में फल छेदक, तना छेदक, माहू जैसे कीड़ों का प्रकोप हो सकता है अतः विशेषज्ञ के अनुसंसा अनुसार प्रबंधन करें। ➢ खड़ी फसलों में समुचित जल एवं खर पतवार प्रबंधन करें।
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	आज के हालात में खेती तो वैज्ञानिक ढंग से ही करें वरना लाभ की जगह नुकसान मिल सकता है। वैज्ञानिक ढंग आपके सदियों से चले आ रहे तरीकों का सुधरा व लाभदायक रूप है जिससे उतनी ही भूमि में कम समय, मेहनत व लागत से ज्यादा उपज मिलती है। ➢ अप्रैल माह में खेत खाली होने पर मिट्टी के नमूने ले लें। तीन वर्षों में एक बार अपने खेतों की मिट्टी परीक्षण जरूर कराएं ताकि मिट्टी में उपलब्ध पोषक तत्वों नेत्रजन) ए फास्फोरसए पोटाशियमए सल्फरए जिंकए लोहाए तांबाए मैंगनीज व अन्यकी मात्रा तथा फसलों में कौन सी खाद (कब व कितनी मात्रा में डालनी हैए का पता चले का पता चले। मिट्टी परीक्षण से मिट्टी में खराबी का भी पता चलता है ताकि उन्हें सुधार जा सके। जैसे कि क्षारीयता को जिप्सम सेए लवणीयता को जल निकास से तथा अम्लीयता को चूने से सुधारा जा सकता है। ➢ ट्यूबवैल व नहर के पानी की जांच भी हर मौसम में करवा लें ताकि पानी की गुणवत्ता का सुधार होता रहे व पैदावार ठीक हों। ➢ इस समय कुछ कमजोर खेतों में हरी खाद बनाने के लिए ढ्रैचाए लोबिया या मूग लगा दें तथा धान रोपने से १२ दिन पहले मिट्टी में जुताई करके - मिला दें इससे मिट्टी की सेहत सुधरती है। ➢ ग्रीष्मकालीन फसलों में सिंचाई का समुचित प्रवंधन करें . ➢ रबी की तैयार फसलों की समय से कटाई - मंड़ाई सुनिश्चित करें तथा सुरक्षित स्थान पर भण्डारण करें
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	अप्रैल माह में उच्च तापमान की विशेषता होती है जिसके परिणामस्वरूप पशुओं में निर्जलीकरण का प्रभाव पड़ता है जिससे शरीर में लवण की कमी, भूख में कमी व पशुओं के उत्पादन में गिरावट आदि भी आती है इसलिए उच्च तापमान से जानवरों

		की रक्षा करना अनिवार्य है। इसके लिए पशुओं को तेज धूप से बचावें व जानवरों को दोपहर के समय छायादार व हवादार स्थान पर ही बाँधें । इस मौसम में पशुओं की पानी की व्यवस्था पर भी उचित ध्यान दिया जाना चाहिए । स्वच्छ व ताजा पानी पशुओं को दिन में कम से कम चार बार पीने हेतु देना चाहिए। इस महीने के दौरान चारागाहों में चारे की उपलब्धता कम हो जाती है और मानसून की शुरुआत तक इसका प्रभाव पशुपोषण पर रहता है ऐसे समय में पशु शरीर में लवणों विशेष रूप से फास्फोरस की कमी होती है जिसके परिणामस्वरूप पशुओं में पीका (अपर्याप्त भूख) नामक बीमारी हो जाती है। जिससे बचाव हेतु पशुओं को खिलाये जाने वाले राशन में ५०–६० ग्राम खनिज मिश्रण अवश्य दें। गर्मियों में हरा चारा लेने हेतु गेहू की कटाई के उपरान्त ज्वार, मक्का व लोबिया की बुआई करें।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ मूँग/उर्द/भिण्डी/लोबिया आदि में पीत शिरा मोजैक/पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के वाहक कीट के नियंत्रण हेतु बुवाई पूर्व बीजोपचार इमिडाक्लोप्रिड 3 ग्रा0/किग्रा0 बीज की दर से करें। रस चूसने वाले कीटों (सफेद मक्खी एवं माहू) हेतु पीला चिपचिपा ट्रैप का प्रयोग करें। ➢ कद्दू कुल की सब्जियों में कद्दू कुल के प्रमुख कीट लाल भृंग से बचाव हेतु फेनवेलरेट 0.4 प्रतिशत धूल की 20–25 किग्रा0 मात्रा का प्रति हे0 की दर से बुरकाव करें। ➢ आम में बौर निकलने पर बागों की बराबर देखभाल करें। भुनगा कीट व मिली बग की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस0एल0 की 0.3 मिली0 अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 1 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें। ➢ दीमक प्रभावित क्षेत्रों में खेत में कच्चे गोबर का प्रयोग न करें, फसल अवशेषों को नष्ट कर बुवाई से पूर्व खेत में नीम की खली 10 कुन्टल प्रति हेक्टेयर की दर से प्रयोग करें।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ भिण्डी के पीतशिरा (मोजैक) व पत्ती मरोड़ वीषाणु रोग के लक्षण दिखायी देने पर विषाणु वाहक कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड के 17.8 प्रतिशत एस0एल0 का 3 मिली प्रति 10 लीटर पानी में घोलबनाकर 15 दिन अन्तराल पर छिड़काव करें। ➢ मूंग में पीले मोजैक वीषाण ुरोग के लक्षण दिखाई देने पर विषाणु वाहक कीट के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिन के अन्तराल पर आवश्यकता अनुसार छिड़काव करें। ➢ रबी फसल की कटाई के बाद खाली खेतों की गहरी जुताई कर जमीन को खुला छोड़ दें, ताकि सूर्य की तेज धूप से मिट्टी में छिपे कीड़ों के अण्डे, रोग जनक कवक के बीजाणु खरपतवार के बीज इत्यादि नष्ट हो जायें।

6.	**बागवानी. प्रबंधन**	**नींबूः** ➢ नींबू में एक वर्ष के पौधे के लिए दो किग्रा. कम्पोस्ट और 70 ग्राम यूरिया प्रति पौधा दें। अप्रैल में नीबू का सिल्ला, लीफ माइनर और सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। ➢ तने व फलों का गलना रोग के लिए बोडों मिश्रण का छिड़काव करें। ➢ जस्ते की कमी के लिए तीन किग्रा जिंक सल्फेट को 1.7 किग्रा. बुझा हुआ चून के साथ 500 लीटर में घोलकर छिड़कें। ➢ नींबू प्रजातियो में फल बनने के तुरन्त बाद सिंचाई करनी चाहिए तथा नये पौधों में देषी फुटान अवष्य हटायें । **बेरः** ➢ छोटे व नये पौधों की सिंचाई करावें पैबन्धी चष्मा हेतु देषी बेर के पौधों की कटाई–छटाई करावें। देषी फुटान हटावें। बागों में सिंचाई रोक देवें। **आमः** ➢ फलों को गिरने से बचाने के लिए यूरिया के दो प्रतिशत घोल से पेड़ पर छिडकाव करें। ➢ प्रथम पखवाड़े में सिंचाई अवश्य दे। छोटे पौधों के बीच की भूमि की जुताई करें फलों को गिरने से रोकने के लिए मध्य अप्रैल में 2,4–डी, 2 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें। ➢ आम के गुम्मा रोग (मालफारमेशन) से ग्रस्त पुष्प मंजरियों को काट कर जला या गहरे गढ्ढे में दबा दें. आम के फलों को गिरने से बचाने के लिए एल्फा नेफ्थलीन एसिटिक एसिड 4.5 एस.एल. के 20 मिली को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें. ➢ मीलीबग नई कोपलों, फूलों व फलों का रस चूसकर काफी नुकसान करती है। नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें तथा नीचे गिरी या पेड़ों पर चढ़ रह कीड़ों को इकट्ठा करके जला दें और घास साफ रखें। **अमरूदः** ➢ अप्रैल में सिंचाई न करें, फूलों को तोड़ दें ताकि फल मक्खी फूलों में अण्डे न दें पाये, जिससे फल सड़ जाते हैं। अमरूद की सिर्फ शरदकालीन फसल ही लेनी चाहिए। **पपीताः** ➢ अप्रैल मे पपीते की नर्सरी लगाने के लिए 70 वर्ग मीटर में 170 बीज को 6×6 इंच की दूरी और एक इंच गहरा लगाएं। उन्नत किस्मों में सनराइज, हनीड्यु, पूसा डिलीशियस, पूसा ड्वार्फ व पूसा जांयट हैं। एक नर्सरी में एक कुंतल खाद मिलाकर बेड तैयार करें और बीज को एक ग्राम कैपटोन से उपचारित करें।

7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ गर्म मौसम को ध्यान में रखते हुए वानिकी पौधशाला के नर्सरी पौध की सुरक्षा एवं समुचित विकास हेतु छाया की उचित व्यवस्था तथा सायंकाल नर्सरी में नियमित सिंचाई करने की सलाह दी जाती है। ➢ किसानों को कृषि वानिकी के तहत वृक्षारोपण की योजना तैयार करने की सलाह दी जाती है जैसे उद्देश्य के अनुसार वृक्ष प्रजातियों का चयन, स्थान, रोपण दूरी, गड्ढे तैयार करना इत्यादि। ➢ पौधारोपण/वृक्षारोपण से पूर्व 30x30x30 cm आकार के गड्ढे तैयार कर लें। ➢ चारे की आवश्यकता को पूरा करने के लिए, किसान खेत की सीमा के किनारे वृक्षारोपण की योजना बना सकते हैं। गर्म हवा के दुष्प्रभाव से पौध को बचाने के लिए शाम के समय पौधशाला में नियमित सिंचाई करें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार 2. डॉ दिनेश साह 3. डॉ ए.सी. मिश्रा 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव 5. डॉ राकेश पाण्डेय	6. डॉ मयंक दुबे 7. डॉ दिनेश गुप्ता 8. डॉ पंकज कुमार ओझा 9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह